दानवों की वापसी

हम विशालकाय बच्चों और स्त्रियों के कंधों पर खड़े हैं — नेफ़िलिम, जिन्होंने स्थापित व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह किया, जो सहस्राब्दियों तक एत्ना के नीचे छिपे रहे, जो अपने अपार दर्प के कारण अनगिनत प्राकृतिक आपदाओं के उत्तरदायी हैं, और जो अब सूर्य के प्रकाश में लौट आए हैं — हमें रग्नारोक का रास्ता दिखाने। जिन्होंने द्वीप और पर्वत रचे, जिन्होंने विशाल निर्माण खड़े किए और जिन्होंने ईश्वर के अधिकार को खुलेआम चुनौती दी, वे अब हमारे बीच हैं।

स्तेफ़ानिया बिज़ोन
अतीत की राख से भविष्य के संसाधन
अकीरा ज़ाकामोतो। पोर्तो मार्गेरा का औद्योगिक क्षेत्र। इस प्रदर्शनी के लिए बनाए गए कैनवासों हेतु तूरिन के इस चित्रकार ने जो पृष्ठभूमि चुनी, वह प्रतीकात्मक है। यह चुनाव आकस्मिक नहीं — गहरे अर्थों से भरा हुआ — और व्याख्या के संदेह के लिए बहुत कम जगह छोड़ता है। पोर्तो मार्गेरा का जन्म और विकास 1917 से आरंभ होता है, जब वेनिस के उद्यमी वोल्पी ने लोक निर्माण मंत्रालय से औद्योगिक बंदरगाह की परियोजना का वित्तीय प्रबंधन प्राप्त किया। पचास वर्षों में औद्योगिक क्षेत्र तिगुना हो गया और जहाज़-निर्माण से जुड़े उत्पादन से वह पेट्रो-रसायन क्षेत्र का प्रेरक केंद्र बन गया। आर्थिक उछाल ने उत्पादन बढ़ाया, और उसके साथ वायु तथा लैगून-जल के प्रदूषण की समस्याएँ और श्रमिकों के स्वास्थ्य पर गंभीर, प्रलेखित परिणाम भी बहुगुणित हुए। बड़े कॉर्पोरेट विलयों, संघर्षों और यूनियन आंदोलनों का रंगमंच रही मार्गेरा, पेट्रो-रसायन क्षेत्र के संकट के साथ फिर से अपने भीतर सिमटने लगी। धीरे-धीरे कारख़ाने छोड़ दिए गए, क्षेत्र के पुनरुद्धार और सफ़ाई की किसी योजना की प्रतीक्षा में। और ठीक इसी क्षण, प्रदूषण से संतृप्त सीसे-से आसमानों के नीचे और धुएँ के धमकाते स्तंभों के पीछे, ज़ाकामोतो के बच्चे लंबे डग भरते हुए आते हैं। अतीत की चित्र-परंपरा के सुनहरे बालों वाले प्रेम-शिशुओं को भूल जाइए, क्योंकि अकीरा के बच्चे कोई साधारण बच्चे नहीं हैं। वे दानव हैं, और केवल क़द में नहीं; अपनी कभी कठोर कभी धमकाती दृष्टि से वे चिमनियाँ और कारख़ानों के ढाँचे ध्वस्त करते हैं। और सीधे हमारे चेहरे में देखते हुए वे हम पर अभियोग लगाते हैं। उनकी आँखों से बचने के लिए मुँह फेर लेना कठिन है, क्योंकि उनके सामने हम सब उस पर्यावरणीय और सामाजिक विनाश के लिए ज़िम्मेदार हैं जिसे एक सदी में हम रच सके। श्रम के विषय को साधने के लिए कलाकार ने जो चित्रात्मक तरीक़े चुने हैं, वे जितने रोचक हैं उतने ही अभूतपूर्व। इन चित्रित पृष्ठों में श्रम केवल उन इमारतों से आह्वानित होता है जिन्होंने एक सदी तक उसे आश्रय दिया; इसी तरह मज़दूरों की उपस्थिति निहित है पर कभी स्पष्ट नहीं की जाती। इस संदर्भ में भी ज़ाकामोतो स्वयं को एक यथार्थवादी चित्रकार सिद्ध करते हैं, जो फिर भी जान-बूझकर इस चित्र-विधा के नियमों का पालन नहीं करते। अकीरा समकालीन समाज के विरुद्ध अपना अभियोग खुलकर नहीं चीख़ते, बल्कि उसे उदात्त बनाते हैं और उदात्त बनाकर परोक्ष रूप से उसे दंडित करते हैं। ये सशक्त और तात्कालिक दृश्य-प्रभाव वाली कृतियाँ हैं, जिनमें गहरे और खुरदरे रंग बच्चों की क़मीज़ों की लाली के साथ सुखद वर्ण-प्रतिबिंदु रचते हैं — वह लाली, जो अर्थपूर्ण ढंग से कारख़ानों की चादरों की याद दिलाती है। इन कैनवासों को देखते हुए हम पाते हैं कि सब कुछ ठीक अपनी जगह पर है, कुछ भी अतिरिक्त नहीं, कुछ भी दृष्टि को खटकता नहीं, कोई फ़ालतू वर्णन-प्रियता नहीं जो केवल दर्शक को आँख मारने और जगह भरने के लिए हो। हमेशा की तरह कलाकार अनुपस्थितियों और उपस्थितियों को बुद्धिमानी से तौलता है, और उन्हें अर्थ से भर देता है। पर आइए अब दृष्टिकोण बदलकर इन चित्र-रचनाओं को दूसरे कोण से देखें। हम पाते हैं कि दरअसल कुछ भी पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है और

आशा की एक झिरी मौजूद है: भारी, राख-रंग आसमान नीले के टुकड़ों को जगह देते हैं, जो दृष्टि को एक ऐसे भविष्य की ओर खोलते हैं जो भिन्न हो सकता है और होना चाहिए। यदि ज़ाकामोतो स्वयं को — और हमें — उद्धार की संभावना न देना चाहते, तो वे केवल औद्योगिक इमारतों की रूपरेखाओं को बोलने देते। पर यहाँ असली नायक बच्चे हैं, जो परिभाषा से ही भविष्य का वादा और आशा हैं। वही हैं जो अतीत को निर्ममता से ध्वस्त करते हुए हमें एक भिन्न और बेहतर कल की नींव रखने का अवसर देते हैं। इस प्रकार पोर्तो मार्गेरा उस सदी के प्रतीक के सिवा कुछ नहीं, जिसने अर्थव्यवस्था और समाज को जड़ से बदल दिया, और अक्सर मनुष्य के अधिकारों तथा व्यक्तियों को रौंद डाला। कृति «श्रम का अंत» में व्यंग्य-भरी मुस्कान से हमें देखता वह बच्चा दरअसल वह प्रस्थान-बिंदु है जहाँ से फिर शुरू करना है। क्योंकि हर अंत सदा एक नए आरंभ को पूर्वमान लेता है।

स्तेफ़ानिया बिज़ोन
दानवों के कंधों पर

अकीरा ज़ाकामोतो की नज़र से देखी गई दुनिया। यह ज्ञात है कि केवल कलाकारों में ही वयस्क जीवन बचपन का स्वाभाविक विस्तार होता है; इसीलिए कहा जाता है कि कलाकार बड़े बच्चे होते हैं। अल्बेर्तो सावीनियो

अकीरा ज़ाकामोतो से पहली मुलाक़ात की मुझे निस्संदेह यह बात याद है कि मैंने कैसे बुरी तरह छिपाते हुए उनके चेहरे पर किसी प्राच्य नक़्श की झलक ढूँढ़ने की कोशिश की थी: कुछ नहीं मिला। अकीरा जापानी नहीं हैं, न उनके वंश-वृक्ष में उगते सूरज की धरती से आए कोई पूर्वज हैं। फिर उनकी जीवनी पढ़ते हुए, जिसमें वे परग्रहियों द्वारा अपहृत बताए जाते हैं, मैंने कुछ कौतूहल से सोचा कि वे किस तरह की चित्रकारी करते होंगे। किसी कलाकार से मिलने के बाद उसकी चित्रकारी का अंदाज़ा लगाने की कोशिश मुझसे अक्सर होती है। बच्चे, बहुत सारे, अपनी सबसे स्वाभाविक भाव-भंगिमाओं में पकड़े हुए, पर सबसे बढ़कर अपनी सबसे अविश्वसनीय भंगिमाओं में। नहीं, मुझे यह अपेक्षा न थी कि अकीरा — केवल ही नहीं, बल्कि मुख्यतः — बच्चे चित्रित करते होंगे। बचपन हममें से हर एक के भीतर और साथ जीता है, यद्यपि वही एकमात्र आयाम है जिससे हम सब अपरिवर्तनीय रूप से बहिष्कृत हैं। वह एक बहुरूपी, मोहक, और साथ ही अज्ञात और रहस्यमय ब्रह्मांड है। सदियों से वह दार्शनिकों, कवियों, लेखकों और कलाकारों का ध्यान और सर्जनात्मकता खींचता आया है; वह एक उलटी दिशा की यात्रा है, जिसका प्रतिरोध कम ही लोग कर पाए, और जिसे हममें से हर एक ने, भिन्न-भिन्न रूपों में, जीवन में कम से कम एक बार करने की कोशिश की है। शायद इसलिए कि वह एक साथ हमारा अतीत है और हमारा एक संभव भविष्य भी। मोहक, निस्संदेह। बेचैन करने वाला, निस्संदेह। सच्चाई यह है कि दूर से देखा गया बचपन सदा एक गहरी उदासी में रँग जाता है, क्योंकि वह खोया हुआ संसार है, और वह सबसे बढ़कर महसूस करने, देखने, छूने की एक अनन्य और अनुपमेय शैली है, जिसका प्रत्यक्ष ज्ञान वयस्कता खो चुकी है। बच्चों से हमें उस विस्मय की ईर्ष्या होती है जिससे वे चीज़ों को देखते हैं, जिससे वे जीवन के रहस्य को टटोलने की कोशिश करते हैं। भोले? बिल्कुल नहीं। और ज़ाकामोतो के कैनवास यही सिद्ध करते हैं। सुनहरे सिरों और प्रेम-शिशुओं की मनोहर आकृतियों को भूल जाइए। अकीरा के बच्चे सच्चे दानव हैं — केवल क़द में नहीं — एक ऐसी प्राचीन प्रज्ञा के धारक और वाहक, जो साथ ही अब भी बन रही है। और इस तरह हम वयस्क इन दानव-बच्चों के कंधों पर बैठे बौने हैं, और उन पर चढ़कर हमें उस पार देखने का अवसर मिलता है। दृश्य के पार, स्पर्श्य के पार। उस सब के पार जो हमें वर्तमान से बाँधता और बाध्य करता है। फिर भी ज़ाकामोतो के कैनवासों से धोखा न खाइए। क्योंकि अपनी रचनात्मक सादगी के बावजूद वे ऐसे संदेश वहन करते हैं जो न तुरंत, न आसानी से पढ़े जा सकते हैं। और सादगी से मेरा आशय उस स्वच्छ, रैखिक संतुलन से है जो उनके हर चित्रित पृष्ठ पर राज करता है। उनकी कोई कृति देखते हुए हमें देर नहीं लगती यह समझने में कि सब कुछ ठीक

अपनी जगह पर है, कि कुछ भी अतिरिक्त नहीं और कुछ भी दृष्टि को खटकता नहीं, कि कोई व्यर्थ और फ़ालतू वर्णन नहीं जो केवल जगह भरने के लिए हो। अनुपस्थितियाँ और उपस्थितियाँ एक ऐसे कलाकार के हाथ से बुद्धिमानी से तौली गई हैं, जिसे — मेरी राय में — हर क़ीमत पर पसंद आने में कोई दिलचस्पी नहीं। अकीरा ने बीसवीं सदी के कला-इतिहास को आत्मसात किया है और साथ ही मानो उसे पोंछकर साफ़ कर दिया है। उनकी कृतियों का कोई अतीत नहीं — इसलिए उनमें उद्धरण और संबंध ढूँढ़ना व्यर्थ है — पर उनका एक वर्तमान है, जो हर एक विवरण में जीता और दबंग होकर चीख़ता है। इसलिए ज़ाकामोतो को हमारे समय का यथार्थवादी चित्रकार मानिए, जो समकालीन समाज के विरुद्ध अपना अभियोग चीख़ता नहीं बल्कि उसे उदात्त बनाता है और उदात्त बनाकर परोक्ष रूप से दंडित करता है। वे उस दुनिया को उलट देते हैं जिसे हम जानते हैं, चीज़ों के बीच शक्ति-संबंध बदलते हुए: वे हमारा हाथ पकड़कर एक लिलिपुटी दुनिया में ले जाते हैं, जहाँ घर अचानक छोटे हो जाते हैं और बच्चे दानव, जो — संयोग से नहीं — लगभग हमेशा हमारी ओर पीठ किए होते हैं। वे हमें एक समुद्र-तट पर ले जाते हैं, जहाँ प्रौढ़ स्त्रियों के एक समूह पर चीनी झंडा पहने एक बालिका की विशाल आकृति छा जाती है, जो समुद्र से निकलकर तेज़ी से किनारे की ओर दौड़ती है: यही यथार्थ का उदात्तीकरण है, जो फिर भी एक चेतावनी की रूपरेखा ले लेता है — इस बारे में कि भविष्य हमारे लिए क्या रख सकता है। पर उनकी दुनिया वह भी है जिसमें अन्येज़े जादुई ढंग से बादलों में खो जाती है, जिसमें मात्तेओ — एक साथ बालक और नायक — एक सुपरमैन है जो हमें कंधों पर उठाए रखने की थकान से सुस्ता रहा है। उनकी दुनिया वह है जिसे हम उस बच्चे की दृष्टि से देख सकते हैं, जो आशा भरे मन और हाथ में नाश्ते की थैली लिए भविष्य में अपना पहला दिन शुरू करता है। और यह एक ऐसी दुनिया है जो, सब कुछ के बावजूद, हमें आशा से भर देती है और हमें अच्छी लगती है।

Luca Motolese

motolese.com — मूल पाठ इतालवी में